International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

नन्द किशोर
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।

राहुल सांकृत्यायन जी हिंदी साहित्य संसार के स्थापित प्रतिमान है। उनका साहित्य अपने समय के जीवंत दस्तावेज है। राहुल जी ने अपने उपन्यास साहित्य के द्वारा समाज में व्याप्त परिस्थितियों को सटीक वर्णित किया है। समाज की परिधि बड़ी विस्तृत एवं व्यापक है। सामाजिक चेतना की मूल प्रकृति समष्टिवादी है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की अपेक्षा समस्त समाज को एक इकाई के रूप में देखने का भाव निहित है।

साहित्य समाज के लिए प्रेरणास्पद एवं नीति निर्धारक का कार्य करता है। उसी प्रकार समाज साहित्य को उर्वरा भूमि प्रदान कर, पुष्पित एवं पल्लवित होने का वातावरण उपलब्ध करवाता है। मूल रूप से साहित्य का आधार जीवन होता है। वह जीवन की आधारशिला के सहारे ही टिका होता है। रामधारी सिंह दिनकर जी का कहना है कि - "साहित्य की अट्टालिका जीवन की आधारशिला पर खड़ी होती है और साहित्यकार के हृदय के तार तब तक नहीं बजते , जब तक उन पर जीवन का आघात नहीं होता। "[i] साहित्य मानव जीवन को ही प्रकाशित करता है। व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है , समाज के बिना व्यक्ति का कोई वजूद नहीं है। सामाजिक प्राणी होने के नाते साहित्यकार वही महान कहलवा सकता है , जो समाज के प्रति जागरूक एवं प्रतिबद्ध हो , जिनमें सामाजिक चेतना व्याप्त हो, जो समाज के प्रति समर्पित हो।

साहित्यकार को सामाजिक माना जाता है। सामाजिक वह होता है जो संवेदना ग्रहण कर सकता है। जब व्यक्ति की संवेदना जागृत होती है , तो व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार भी करता है। आत्म-साक्षात्कार होने पर व्यक्ति अपने आप को ऊपर उठाकर विराट तक पहुंचाता है।

सामाजिक चेतना के बिना व्यक्ति अधूरा होता है। राहुल सांकृत्यायन जी एक चेतना एवं संवेदना संपन्न व्यक्ति थे। वे एक ऐसे समाज की स्थापना का स्वप्न देखते थे, जहां अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, धनी-निर्धन का अंतर न हो। धार्मिक रूढ़िवाद के आडंबर न हों, व्यक्ति के परिश्रम का सम्मान हो , सबको समान न्याय एवं उन्नति के एक जैसे अवसर प्राप्त हों।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राहुल जी का ईश्वर नामक शक्ति में कोई विश्वास नहीं है। वे ईश्वर को गरीब मेहनतकश लोगों को ठगने का साधन मात्र मानते हैं। समाज में जो विषमता व्याप्त है, शोषक-शोषित एवं धनी-निर्धन आदि का जो संबंध है, वह सामाजिक चेतना से है। हम एक और व्यक्ति को अछूत मानकर उससे भयंकर घृणा करते हैं, उनके लिए हमारा व्यवहार पशुओं से भी बुरा है। साथ ही हम ईश्वर एवं धर्म की दुहाई देते हैं, राहुल जी अपनी पुस्तक 'भागो नहीं दुनिया को बदलो' में लिखते हैं- "हिंदुओं का बरताव, हिंदुओं ने दस करोड आदमियों को चमार, मुसहर, डोम बनाकर उन्हें जानवर से भी बदतर कर दिया। जब कोई उनमें से मंदिरों में जाता है, तो कह देते हैं कि पोथी में इसके खिलाफ लिखा है। पोथियां किसने बनाई? उन्होंने जो कहते हैं कि जोंके भगवान की ओर से भेजी गई है।"[iii]

इस प्रकार की सामाजिक चेतना से युक्त व्यक्ति के बौद्धिक स्तर का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। सामाजिक चेतना के स्वरूप को निम्न परिभाषाओं से भी समझा जा सकता है। चेतना के बारे में समाजशास्त्री , दार्शनिक एवं वैज्ञानिक कहते हैं। "चेतना' शब्द बुद्धि, ज्ञान, मनोवृति, स्मृति, सुधि, संज्ञा, होश, आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।"[iii]

अंग्रेजी में चेतना शब्द का पर्यायवाची (कॉन्शियस) CONCIOUS है जो बुद्धि की जागृत अवस्था, किसी के विषय में ज्ञान , जानकारी अथवा विचार को घोषित करता है। सर विलियम हैमिल्टन ने चेतना को परिभाषित न होने वाला बताते हुए कहा है - "चेतना की परिभाषा नहीं की जा सकती। हम केवल यह अनुभव कर सकते हैं कि चेतना क्या है, लेकिन हम चेतना को जो समझते हैं, जैसा अनुभव करते हैं, बिना उलझन के दूसरों को नहीं बता सकते।"[iv]

हिंदी विश्वकोश में चेतना के बारे में लिखा है - "जीवधारियों में रहने वाला वह तत्व है जो उन्हें निर्जीव पदार्थों से भिन्न बनाता है। दूसरे शब्दों में हम उसे मनुष्य की जीवन क्रियाओं को चलाने वाला तत्व कह सकते हैं। चेतना स्वयं को और अपने आसपास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है।"[v] हिंदी साहित्य कोश के प्रधान संपादक धीरेंद्र वर्मा जी ने चेतना के विषय में लिखा है कि - "चेतन मानस की प्रमुख विशेषता चेतना है , अर्थात वस्तुओं, विषयों, व्यवहारों का ज्ञान।"[vi]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मानक हिंदी कोष के लेखक रामचंद्र वर्मा के अनुसार - "चेतना मन की वह वृत्ति या शक्ति है, जिससे जीव या प्राणी को आंतरिक अनुभूतियों, भावों, विचारों, बाह्य घटनाओं, तत्वों या बातों का अनुभव या भाव होता है।"[vii]

चेतना के विषय में डॉक्टर रमेश कुंतल 'मेघ' का विचार है - "चेतना में नाना भांति की मानसिक क्रियाएं शामिल है जैसे संवेदना , प्रत्यक्षीकरण, अवधारणा, चिंतन, अनुभूति और संकल्प। इस तरह यह , मन, बुद्धि, अहंकार का संश्लेष है। इसे 'चिति' भी कह सकते हैं। चेतना एक चिंतनात्मक अभिवृत्ति का द्योतक है जो व्यक्ति को स्वयं के प्रति तथा विभिन्न प्रकृति की स्पष्टता तथा जटिलता वाले पर्यावरण के प्रति जागरूक करता है। "[viii] इस प्रकार इन परिभाषाओं से प्रतिपादित होता है कि चेतना मानव मस्तिष्क का गुणधर्म है। जिसके द्वारा हम अपने परिवेश की घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं। हम अपने परिवेश को समझ पाते हैं।

अतः सामाजिक चेतना को निम्न प्रकार से भी समझा जा सकता है - लोगों की ज्ञानात्मिका वृत्ति को हम सामाजिक चेतना कह सकते हैं। डॉ रत्नाकर पांडे जी सामाजिक चेतना के विषय में लिखते हैं - " सामाजिक चेतना अभावात्मक या नकारात्मक नहीं होती। यह प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान रहती है , परंतु रूढ़ि और शिक्षा अभाव के कारण दुष्प्रभावित व कुंठित हो जाती है। इस दुष्प्रभाव से मुक्त रहना और कुंठा को अपनी अंतः तृप्ति से तिरोहित करना ही सामाजिक चेतना है।"[ix]

सामाजिक चेतना के विषय में मार्क्स एवं एंगल्स का मानना है - "आर्थिक व्यवस्था ही वह मूलभूत आधार है , जिस पर राजनीतिक तथा सांस्कृतिक चेतना निर्भर करती है, तथा उसी के अनुरूप सामाजिक चेतना के विविध रूप निर्मित होते हैं। तात्पर्य यह है कि मनुष्यों की चेतना उनके अस्तित्व का निर्धारण नहीं करती , इसके विपरीत उनका सामाजिक अस्तित्व उनकी चेतना का निर्धारण करता है।"[x]

राहुल जी एक बहुनाम धन्य , विराट व्यक्तित्व के स्वामी हैं। उनके उपन्यास साहित्य में उनके विराट बौद्धिक स्वरूप के दर्शन होते हैं। वे साम्यवादी चिंतन से ओतप्रोत व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति हैं। उनका मानना है कि समाज में व्याप्त समस्त समस्याओं का समाधान साम्यवाद से किया जा सकता है। यही सभी समस्याओं का औषध है।

समाज में व्याप्त वर्ग वैषम्य , धर्म की धोखाधड़ी , अन्याय एवं असमानता का वातावरण, उस पर धर्म की दुहाई। हिंदू, मुस्लिमों की धार्मिक पोथियों का जाल, इन सब

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ने मिलकर कमेरे वर्ग के जीवन को नरक में बदल दिया था। राहुल जी की सामाजिक चेतना ने इन सब को समझ कर , उनका प्रतिकार करने का निर्णय लिया। अपने निर्णय पर वे नगाधिराज के समान अचल , अटल खड़े रहे , एवं जीवन भर संघर्ष करते रहे। गरीबों, मजदूरों, किसानों के लिए उन्होंने भारी संघर्ष किया। अपने उपन्यास 'बाईसवीं सदी' में उन्होंने भविष्य के वातावरण की कल्पना की है , कि यदि साम्यवाद का वातावरण हो तो, सभी के लिए समरसता एवं समानता का वातावरण होगा। सभी कर्म एवं भोग का आस्वादन मिलकर करेंगे। इनका मानना है कि समाज में व्याप्त समस्याओं का मूल कारण व्यक्ति नहीं , व्यवस्था है। यह जो पूंजीवादी व्यवस्था है , इसको समाप्त किए बिना सभी को समानता का अधिकार नहीं मिल सकता है। साम्यवाद ही इसका निराकरण कर सकता है।

राहुल जी ने अपने उपन्यास 'मधुर स्वप्न' में ईरान के गरीब लोगों की अकाल की स्थिति का वर्णन, एवं धनिकों, जमींदारों द्वारा उस समय की ऐश्वर्यपूर्ण जिंदगी का वर्णन किया है। किस प्रकार एक तरफ लोग भूखों मर रहे हैं और दूसरी तरफ ये मौज उड़ा रहे हैं। इस विषमता का उन्होंने कठोर वर्णन किया है। साथ ही साम्यवाद को इसके समाधान के रूप में प्रस्तुत किया है।

इनका उपन्यास 'जय यौद्धेय' भी गणतंत्रीय व्यवस्था एवं राजतंत्र के चरित्रों को चित्रित करता है। उन्होंने बताया कि गणतंत्र किस प्रकार लोगों को स्वतंत्रता से जीवन जीने देता है। वहीं राजतंत्र लोगों को भेड़ बनाकर रखना चाहता है। इस उपन्यास में तात्कालिक देशकाल, वातावरण एवं राजनीतिक परिस्थितियों का सटीक चित्रण मिलता है।

'सिंह सेनापति' उपन्यास में तात्कालिक समाज में व्याप्त समानता , बंधुता एवं समता का चित्र दिखाई पड़ता है। किस प्रकार गणतंत्र में राज्य की व्यवस्था गण के चुनिंदा लोगों संभालते हैं। उनका चयन किस प्रकार किया जाता है। विवाह प्रथा , खान-पान आदि सभी का वर्णन है। राजतंत्र किस प्रकार गणों को अपने वश में करना चाहता है, इसका भी वर्णन उनके उपन्यास सेनापति मिलता है। इस उपन्यास के माध्यम से राहुल जी ने बौद्ध धर्म की समानता के पाठ को पढ़ाने का सार्थक प्रयास किया है। इस समय बौद्ध के संघाराम की शिक्षाओं के अनुरूप जीवन में भी समानता एवं एकता बंधुता के साथ जीवन जीने के लिए प्रेरित किया गया है। इसमें बताया गया है कि गणतंत्र में कोई किसी का गुलाम नहीं होता, राजतंत्र में इसकी उल्टा होता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इनके उपन्यास 'भागो नहीं दुनिया को बदलो ' में ये मानव की स्वतंत्रता के बड़े हिमायती हैं। वे ऐसे समाज का क्षय चाहते हैं- "जहां सामंतवाद और पुरोहितवाद हैं। जहां प्रतिभाशाली अर्थाभाव में उचित शिक्षा नहीं ले पाता और धनवान विश्व की सर्वोच्च उपाधि पा लेता है। किसान और मजदूर जिसके लिए जवानी धूल में मिलाते हैं , अपनी नींद हराम करते हैं, उन्हें भूखा नंगा करके भी संतुष्ट नहीं होता, बल्कि पग-पग पर अपमानित करना अपना कर्तव्य समझता है। इसी को प्रतिभा का दमन कहा जाता है। "[xi] राहुल जी डंके की चोट पर कहना चाहते हैं कि व्यक्तिगत संपत्ति का अधिकार समाप्त करके ही ऐसी सामाजिक विसंगतियों से व्यक्ति को बचाया जा सकता है।

इनके उपन्यास 'राजस्थानी रनिवास ' में इन्होंने नारी की मार्मिक दशा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। किस प्रकार ठकुरानियां एवं राजपूतनियों को घौर बंदिनी का जीवन यापन करना पड़ता है इसका चित्रण मिलता है। पर्दा प्रथा , दहेज प्रथा, नारी अशिक्षा, धार्मिक आडंबर एवं अनमेल विवाह आदि का चित्रण मिलता है। वे नारी को अस्मिता के लिए संघर्ष एवं उसमें उसकी पराजय का बोध करवाते हुए उसकी आर्थिक स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं। वे नारियों को पीड़ित शोषित और पराधीन देखना नहीं चाहते हैं। नारियों को समाज में समानता एवं स्वतंत्रता के साथ जीवन यापन करते देखना चाहते हैं। उनका मानना है कि नारियों की स्वतंत्रता के लिए जरूरी है उनको समुचित शिक्षा का अधिकार प्राप्त हो। वर्तमान ढांचे को बदले बिना नारी को स्वतंत्रता मिले यह नारा बिल्कुल हास्यास्पद मालूम होता है। राहुल जी औरत को पति की संपत्ति में भी बराबर का अधिकार दिलाना चाहते हैं।

इस प्रकार राहुल सांकृत्यायन जी के उपन्यास सामाजिक चेतना से ओतप्रोत हैं। उन्होंने अपनी इस उपन्यास विधा से तत्कालीन प्रत्येक व्याधि पर अपनी लेखनी की कठोर चोट करने का सार्थक प्रयास किया है। वे अतीत के प्रति गौरव को स्वीकार करते हैं। उनका मानना है कि अतीत के गौरव के साथ -साथ नवीनता को भी धारण करना चाहिए। जडता को भी मौत मानते हैं। प्रवाहमयता ही जीवन का आधार तत्व है। इसी अवधारणा ने उनके जीवन को सदैव गतिमान रखा। बचपन में पढ़ा गया शेर-

'सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहां?
जिन्दगी ग़र कुछ रही तो, नौजवानी फ़िर कहां?'

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उन्होंने अपने जीवन में इसे अक्षरसः शामिल किया। राहुल जी इतिहास के ढांचे में साम्यवाद का श्वास भरना चाहते थे। राहुल जी ने अपने प्रवाहमयता से जो अपार ज्ञान अर्जन किया और उससे इतिहास में झांककर वर्तमान के स्वरूप को सुधारना चाहा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर यात्रा उनकी जीवनधारा बन गई। अपनी प्रसिद्ध कृति 'मेरी जीवन यात्रा' में वे लिखते हैं 'प्रत्येक धर्म उपदेश उस नाव की तरह पार उतरने के लिए है, न कि सिर पर बोझ की भांति ढोए चलने के लिए।

राहुल सांकृत्यायन जी 'स्व' को मानव के लिए मिटाने वालों में अग्रगण्य हैं। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा समाज की अव्यवस्था की शल्यक्रिया करके उसे विकास के नवीन सोपानों पर आरुढ़ करने का प्रयास किया है।

संदर्भः-

[i] रामधारी सिंह दिनकर, साहित्य की उपयोगिता लेख।
[ii] राहुल सांकृत्यायन, भागो नहीं दुनिया को बदलो, पृष्ठ 163
[iii] नालंदा विशाल शब्द सागर, (1954) पृष्ठ 388
[iv] डॉ रत्नाकर पांडे, हिंदी साहित्य सामाजिक चेतना, पृष्ठ 160
[v] हिंदी विश्व कोश, खंड-4, पृष्ठ 282
[vi] धीरेंद्र वर्मा, (संपादक) हिंदी साहित्य कोश, पृष्ठ 316
[vii] रामचंद्र वर्मा, मानक हिंदी कोश, खंड-2, पृष्ठ 274
[viii] डॉ रमेश कुंतल 'मेघ', (आलोचना) जनवरी-मार्च 1974
[ix] डॉ रत्नाकर पांडे, हिंदी साहित्य सामाजिक चेतना, पृष्ठ 168
[x] डॉ सारस्वत द्वारा पढ़ा गया प्रपत्र।
[xi] राहुल सांकृत्यायन, तुम्हारी क्षय (1947)